प्रातःक्लास 23/4/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप बैठ करके सभी के आत्माओं को समझाते हैं। शरीर भी याद पड़ती है तो आत्मा भी याद पड़ती है। शरीर बिगर आत्मा को याद नहीं किया जा सकता। समझा जाता है वह आत्मा अच्छी है । इस आत्मा को क्या शौक है, यह बाहरमुखी है, यह इस दुनियां का सैर आदि करनी चाहती है, उस दुनियां को भूली हुई है। पहले उनका नाम–रूप सामने आता है। फलाने की आत्मा को याद किया जाता है। फलानी की आत्मा अच्छी सर्विस करती है। इनमें यह–2 गुण है। पहले शरीर को याद करने से फिर आत्मा याद आती है। पहले शरीर याद आवेगा; क्योंकि शरीर बड़ी चीज़ है ना। फिर आत्मा तो सूक्ष्म बहुत छोटी है वह याद आवेगी। इन बड़े शरीर की कोई महिमा नहीं की जाती है। महिमा आत्मा की ही की जाती है। इनकी आत्मा अच्छी सर्विस करती है। फलानी की आत्मा इनसे भी अच्छी है। पहले तो शरीर याद आता है। इनको अनेक शरीर, अनेक आत्माओं को याद करना पड़ता है। शरीर का नाम याद नहीं आता। सिर्फ़ रूप याद आता है। फलाने की आत्मा कहने से शरीर ज़रूर याद पड़ता है। जैसे तुम समझते हो इस दादा के शरीर में शिवबाबा आते हैं। चलते–फिरते हो बाबा के साथ हो। जानते हो इनके तन में बाबा है। शरीर ज़रूर याद पड़ेगा। पूछते हैं हम कैसे याद करें? शिवबाबा को ब्रह्मा तन में याद करें या परमधाम में याद करें? बहुतों को यह प्रश्न उठता है। बाबा कहते हैं याद तो आत्मा को करना है; परन्तु शरीर भी ज़रूर याद पड़ता है। पहले शरीर फिर आत्मा। बाबा इनके शरीर में बैठा है तो शरीर ज़रूर याद आवेगा ना। फलाने शरीर वाली आत्मा में यह गुण है, यह अवगुण है। बाप भी देखते रहते हैं कौन मुझे याद करते हैं, किसमें बहुत गुण है, किस फूल में खुशबुएं हैं। फूलों से दिल रहती है। गुलदस्ता बनाते हैं उसमें तो राजा–रानी, प्रजा भिन्न फूल आदि सभी डालते देते हैं। बाबा की नज़र तो फूलों के तरफ जावेगी। कहेंगे मनोहर की आत्मा बड़ी अच्छी है। बड़ी सर्विस करती है। भल सर्विस बहुत है, यहां–वहां भागना पड़ता है फिर भ(ी) आत्माभिमानी में रह बाप को याद करते रहते हैं। जहां सर्विस देखते हैं वहां भागती है। फिर सबेरे उठकर याद में बैठती होगी तो किसको याद करती होगी। शिवबाबा परमधाम में याद आता होगा या मधुबन में याद आता होगा? बाबा याद आता होगा ना। इसमें शिवबाबा है; क्योंकि बाप तो अभी नीचे आ गया है। मुरली चलाने नीचे आये हैं। उनको अपने घर में तो कोई काम नहीं होगा। वहां जाकर क्या करेंगे? इस तन में ही प्रवेश करते हैं। तो पहले ज़रूर शरीर याद आवेगा। फिर आत्मा। फलाने शरीर में जो आत्मा है यह बड़ी अनन्य अच्छी है। उनको सर्विस बिगर और कोई चीज़ सूझता नहीं है। बहुत मीठी है। बाबा बैठे रहते हैं तो सभी को देखते रहते हैं। फलानी बच्ची बहुत अच्छी है। बहुत याद करती है। बांधेली बच्चियों को विकार के लिए कितनी मार मिलती है। कितना प्रेम से याद करती होंगी। इस समय का हिसाब–किताब है। कर्मों की गति है ना। जब बहुत याद करती है तो खुशी के मारे प्रेम के आँसू भर जाते हैं। कब वह आँसू गिर भी पड़ते हैं। बाबा को और धंधा क्या–2 होता है सभी को याद करते हैं। बहुत बच्चियां याद आती हैं। इ(स) आत्मा में तो कुछ भी दम नहीं है। बाप को याद ही नहीं करनी है। इनकी आत्मा बहुत चंचल है। किसको भी सुख नहीं देती है। यह अपना कल्याण ही नहीं करते। बाप तो यही जांच करते रहेंगे। याद करना माना उसको सकाश मिलती है। आत्मा का परमात्मा साथ कनेक्शन रहता है ना। एक दिन आवेगा जबकि योगबल में बहुत रहेंगे। यह भी किसको याद करेंगे तो झट उनको बाप का सा. हो जावेगा। है तो बहुत छोटी बिन्दी। सा. हो भी तो समझ न सकेंगे कि यह क्या है। फिर भी शरीर ही याद आता है। आत्मा है बहुत छोटी; परन्तु याद करते हैं तो उनकी आत्मा पावन बनती जाती है। कोई में तो कुछ भी खुशबुएं नहीं है। यह आत्मा कोई काम के नहीं हैं। बाबा को बगीचा याद पड़ता है। यह टांगर ,यह अक ,यह रत्न ज्योत है। बिल्कुल ही बाप को याद नहीं करते हैं। बाप याद उन बच्चों को करते हैं जो सर्विस अच्छी करते हैं। बाप

को याद करते हैं। वह बाप को बहुत ही प्यारे लगते हैं। उनकी जो खुशबुएं आवेगी वहां भी वह अच्छे–2 फूल बनेंगे। बग़ीचे में वैरायटी–2 के फूल होते हैं ना। बाबा भी देखते हैं यह बहुत अच्छा खुशबुएंदार फूल हैं यह इतना नहीं। पद भी कम होगा। बाप के जो मददगार बनते हैं। वही ऊँच पद पाते हैं। वह भी जो बाप को याद करते रहते हैं। ब्राह्ण से देवता फिर ट्रांसफर भी ऐसे ही होते हैं। कोई आत्मा तो जैसे एकदम अक के फूल। हर एक के गुण तो याद आते हैं। यहां बाबा के पास आते हैं तो सुनाते हैं अथवा लिखत(ते) भी हैं हमारे में यह–यह अवगुण है। यह वर्णन भी संगमयुग पर ही कर सकते हैं कि यह दैवी फूल है या आसुरी फूल है। फूल तो भिन्न है; परन्तु उनमें वैरायटी बहुत है। बाबा याद करते रहते हैं। टीचर अपने स्टूडेन्ट को देखेंगे ना यह कम पढ़ते हैं। दिल में तो समझेंगे ना। यह बाप भी है, टीचर भी है। बाप तो है ही, बैठे हैं। टीचरपने का जास्ती चलता है। टीचर को रोज़ पढ़ाना पड़े। इस पढ़ाई के ताकत से वह पद पाते हो। सुबह को सवेरे गुरू बन बैठते हैं, याद की यात्रा में। इस समय टीचर बन बैठते हैं। बाप तो है ही। सुबह में तुम भाईयों को बाप की याद में बैठाते हैं। वह सबजेक्ट है याद की। फिर मुरली चलती है। यह है पढ़ाई की सबजेक्ट। मुख्य है ही योग और पढ़ाई। बस। उनको ज्ञान–विज्ञान भी कहा जाता है। विज्ञान भवन नाम भी रखा है; परन्तु अर्थ थोड़े ही जानते हैं। कोई .... का नाम रख दिया है। अभी हम कहेंगे यह ज्ञान–विज्ञान भवन है। जहां बाप आकर सिखलाते हैं। ज्ञान से सारी दृष्टि की नॉलेज मिल जाती है। विज्ञान अर्थात् तुम योग में रहते हो। जिससे पावन बन जाते हैं। तुमको अर्थ का पता है। अभी बाबा द्वारा तुमको सारी दुनियां का भी मालूम पड़ता है। तो बाबा बच्चों को देखते रहते हैं। इसमें बहुत भूत है। देहअभिमान वालों में भूत होता है। देहीअभिमानी बनने से ही भूत निकलेंगे। ऐसे नहीं कि सभी की भूत निकल जावेगी। फट से नहीं। हिसाब–किताब सब चुक्तू हो। अपने चलन अनुसार ही फिर पद पावेंगे। क्लास ट्रांसफर होते हैं। वह होते हैं हद के क्लास। ट्रांसफर ऊपर हो रही है। ज़रूर ऊपर वाले ही क्लास में होंगे। अभी इस दुनियां की ट्रांसफर नीचे हो रही है। और तुम्हारी ट्रांसफर ऊपर हो रही है। कितना फ़र्क है। वह कलयुगी सीढ़ी नीचे उतरते जाते हैं। और तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर सीढ़ी ऊपर चढ़ते हो। दुनिया तो यही है सिर्फ़ बुद्धि का काम है। तुम कहते हो संगमयुगी है। पुरुषोत्तम बनाने लिए बाप को आना पड़ता है। तुम्हारे लिए। अभी यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। बाकी तो वह सभी भक्ति मार्ग के घोर–अंधियारे में हैं। भक्ति को वह बहुत ही अच्छा समझते हैं ; क्योंकि ज्ञान का उन्हों को मालूम नहीं है। है ही भक्तिमार्ग । जब ज्ञान मिले। तुमको अभी ज्ञान मिला है तो तुम समझते हो भक्ति में हम नीचे ही उतरते थे। ज्ञान के एक चिटके से ही आधा कल्प लिए हम चढ़ जाते हैं। फिर तो वहां तो ज्ञान की बात भी नहीं होगी। यह सभी बातें महारथी बच्चे ही सुनकर धारण कर और सुनाते रहेंगे। बाकी तो यहां से बाहर निकले और खलास। कर्मों की गति ऐसी है। कर्म–विकर्म–अकर्म की गति भी भगवान ही बताते हैं। जब समय होता है। यह है कल्प का संगमयुग। पुरानी दुनिया खत्म और नई दुनियां की स्थापना होनी है। विनाश सामने खड़ा है। तुम संगमयुग पर खड़े हो। और मनुष्यों के लिए कलयुग चल रहा है। कितना भक्ति के घोर–अंधियारे में हैं। गिरते ही रहते हैं। कोई तो निमित्त भी हैं? हां रावण। 5 विकारों को रावण कहा जाता है। भ्रष्टाचारी से विकार पैदा होते हैं। सतयुग में भ्रष्टाचारी अक्षर नहीं होता। इस सभा में भी वास्तव में भ्रष्टाचारी कोई रह न सके। जब तुम ज़ोर भरें .... फिंर यह भी होगा। तुमको झट मालूम पड़ जावेगा। यह भ्रष्टाचारी तो यहां का वायुमण्डल खराब कर देंगे। यह आगे चल पता पड़ेगा। अभी नहीं। ऐसे छिपकर जो आकर बैठते हैं उनको चोट भी बहुत लगती है। एकदम गिर पड़ेगा। ईश्वर के सभा में दैत्य बन बैठेगा। तो झट पता पड़ेगा। पत्थर बुद्धि तो हैं ही। बाकी भी पत्थर बुद्धि हो जावेगा। सौणा दण्ड पड़ जावेगा। अपन को ही नुकसान पहुँचावेंगे। कहते हैं हम विकार में जाये क्लास में आकर बैठते हैं। देखो

इनको पता पड़ता है कि विकारी हैं। हमको क्या पड़ी है? जो करेगा खुद ही भोगेगा। हमको यह जानने की भी दरकार नहीं है। इनको कहा जाता है आसुरी योग। दुःख देने वाले। कचहरी में सब कोई सच्च थोड़े ही बताते हैं। बहुत छिपाते हैं या कहते हैं पीछे बताऊँगा। यह भी देहअभिमान हो गया। सभी के आगे सुनाने से कहेंगे यह तो कितना सच्चा है। बाबा को मालूम तो सभी पड़ता है ना। गाया जाता है ''सच्च तो बिठो नच''। सच्च कहेंगे तो डांस करेंगे अपने राजधानी में। बाप है ही ट्रुथ। तो बच्चों को भी कितना सच्चा बनना चाहिए। कभी भी झूठ नहीं। बाबा बच्चों से पूछते हैं शिवबाबा कहां है तो कहते हैं इसमें ही है। परमधाम को छोड़ कर दूर देश के रहने वाले आये हैं देश पराये। उनको तो अभी बहुत ही सर्विस करनी है। वहां जाकर क्या करेंगे? बाप कहते हैं मुझे रात–दिन यहां सर्विस करनी पड़ती है। वहां जाकर क्या करेंगे? यहां बहुत सर्विस करनी पड़ती है। संदेशियों को, भक्तों को भी सा. कराते हैं। है तो यहां ही। वहां तो कोई सर्विस ही नहीं। सर्विस बिगर बाबा को सुख नहीं। सारी दुनिया की ही सर्विस करनी है। सभी पुकारते हैं बाबा आओ। कहते हैं मैं इस रथ में आता हूँ। मनुष्य नहीं जानते हैं तो उन्होंने घोड़ागाड़ी बनाये दिये हैं। अभी घोड़ागाड़ी में कृष्ण कैसे बैठेगा? ऐसे भी नहीं कोई शौक होता है घोड़ागाड़ी पर चढ़ने की। कोई साहूकारों को करके कब दिल होती है गाड़ी पर सवारी कर के देखें। वहां तो ऐसी चीज़ होती नहीं। अमेरिकन यहां आते थे तो उन्हों को घोड़े गाड़ी में बड़ा मज़ा आता था। इसमें अपनी बड़ाई का नहीं रहता है। वहां तो ऐसी चीज़ें होती ही नहीं। देहअभिमानी और देही अभिमानी बनने की बातें भी सिवाय संगमयुग के कब होती नहीं। देहीअभिमानी और देहअभिमानी का ज्ञान भी सिवाय बाप के और कोई समझा न सके। तुम भी अभी जानते हो। आगे थोड़े ही जानते थे। क्या कोई गुरू ने सिखाया? गुरू तो बहुत किये कोई ने नहीं सिखाया। बहुत गुरू करते हैं समझते कोई से शान्ति का रास्ता मिल जावेगा। बाप कहते हैं शान्ति का सागर तो एक ही है। वह ही साथ ले जाते हैं सुखधाम–शान्तिधाम का भी किसको पता नहीं है। अपन को कोई शूद्र समझते नहीं हैं। कलियुग में शूद्र वर्ण। इन वर्णों का भी तुम्हारे सिवाय और किसको पता नहीं है। यहां सुनते हैं फिर बाहर जाने से भूल जाते हैं। धारणा होती नहीं। बाप कहते हैं कहां भी जो हो(जाओ) , बैज पड़ा हुआ हो। इसमें लज्जा की तो बात ही नहीं। यह तो बहुत कल्याण के लिए बाप ने बनवाई है। किसको भी समझा कर दो। कोई अच्छा सेन्सीबुल मनुष्य होगा तो कहेगा इस पर आप का खर्चा हुआ होगा। बोलो खर्चा तो होता ही है। ग़रीबों के लिए फ्री है। वह भी धारण कर लेवें तो बहुत ऊँच पद पा सकते हैं। पैसा है तो, नहीं तो क्या करेंगे? किसके पास पैसे; परन्तु बहुत मनहूस भी होते हैं। इसने तो प्रैक्टिकल करके दिखाया। ममत्व तोड़ना तो फादर से सीखो। इसने भी सभी कुछ माताओं के हवाले कर दिया। तुम बैठ सभी को सम्भालो; क्योंकि अभी तो यह ज्ञान मिला है पिछाड़ी में कोई भी याद न आये। अंतकाल जो स्त्री सिमरे.....बड़े–2 महल , बिल्डिंग आदि होंगे तो अंत में वह याद पड़ेंगे; परन्तु तुमने थोड़ा भी सुना तो प्रजा में आ जावेंगे। बाप तो है ही ग़रीब निवाज़। कोई पैसे होते भी मनहूसता दिखलाते हैं। यह नहीं समझते पहले–2 वार्स(वारिस) तो यह (शिवबाबा) है। भगवान वार्स(वारिस) तो भक्तिमार्ग में भी है। उनको देते हैं ना। ईश्वर अर्थ क्यों देते हैं? समझते हैं ईश्वर के नाम पर ग़रीबों को देंगे तो ईश्वर एवज़ा में देंगे। दूसरे जन्म में मिलता तो है ना। यहां फिर कहते हैं सभी पर ग्रहण लगा हुआ है। कहते हैं ना दे दान तो छूटे ग्रहण। बाप को तो सभी कुछ दान दे दिया। शरीर ,मित्र,सम्बन्धी आदि जो कुछ भी है सभी बाबा को समर्पण कर दिया। बाबा, यह सब आपका है। सारी सृष्टि पर ग्रहण लगा हुआ है। वह कैसे एक सेकण्ड में छूटता है, काले से गोरे कैसे बनते हैं यह अभी तुम जानते हो। फिर औरों को समझाना भी है। अन्दर में समझते हैं समझा न सके वह भी काम के

नहीं। बाप कहते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण। हम तुमको अविनाशी ज्ञान रत्न देते हैं। तुम देते जाओ तो (भा)रत पर तथा सारी दुनियां पर जो राहू का ग्रहण बैठा हुआ है वह उतर जाये। फिर बृहस्पति की दशा हो। (सभी से) अच्छा बृहस्पत की दशा होती है। अभी तुम जानते हो भारत ख़ास और आम सारी दुनिया पर ग्रहण है। अभी वह कैसे छूटे? यह तो बाप है ना। बाप तुमसे सभी कुछ पुराना लेकर विश्व की बादशाही देते हैं। इसको बृहस्पत की दशा कहा जाता है। मुक्तिधाम में जो जाते हैं उसको बृहस्पत की दशा ही कहेंगे। बृहस्पत की दशा वाले तो पहले–2 ही आवेंगे। देरी से आने वालों को क्या मिलेगा? बृहस्पत की दशा ही नहीं जो स्वर्ग़ का सुख भोगें। यह दशाएं भी बहुत समझने की हैं। पढ़ाई में भी दशाएं बैठती हैं ना। बाबा नाम भी लेते हैं। इस समय अनुसार सर्विसएबुल मनोहर है, गंगे है। अच्छे–2 हैं। इन पर बृहस्पत की दशा है। जो सर्विस नहीं करते हैं उन पर कहेंगे राहू की दशा। दशाएं चलती हैं। इस समय बाप वर्णन करते हैं। वह फिर भक्ति में चलती है। मनुष्य तो बिल्कुल ही बेसमझ है। हम भी बेसमझ (थे)। अभी बाप ने पूरी समझ दी है। पूरा समझदार बनने से पहले–2 जावेंगे। ट्रांसफर होना है। यहां से ट्रांसफर हो जावेंगे रुद्रमाला में। वहां से फिर आवेंगे अपना वर्सा पाने नम्बरवार। बच्चों को यह ज्ञान बिल्कुल नहीं था। बहुत हैं जिनको यह ज्ञान बहुत अच्छा लगता है, कोई तो भूटू हैं। कुछ भी समझते नहीं। ऐसे मत समझो कोई याद करते हैं। बाबा कशिश करते हैं तो याद करते हैं। बाबा की कशिश आती है। सुबह को आकर बैठने में बाबा को मज़ा बहुत आता है। बच्चों क(ो) देखकर खुश होते हैं। जैसे कि बगीचे में खड़े हैं। यह बड़ा अच्छा बच्चा है। इनमें ज्ञान नहीं। यह मीडियम है। सभी सेन्टर्स के बच्चों को देखते हैं। नाम–रूप शरीर ज़रूर याद आता है। फलाने की आत्मा। लिखते ऐसे हैं मेरी आत्मा को तूफान आती है। यह होता है। बाबा (भ)ी कहेंगे इनकी आत्मा बहुत अच्छी है। इनकी आत्मा सेकण्ड ग्रेड की है। जितना–2 योग होगा उतना ज्ञान भी अच्छा लगेगा। सर्विस भी करेंगे। ज्ञान नहीं है तो योग से भी सर्विस कर सकते हैं। फायदा तो है ना। मुख्य है ही याद और ज्ञान। अलफ और बे। अलफ को तो ज़रूर याद करना पड़े। बाप को याद करते विश्व के मालिकपना ले लेते हैं। यह दुनियां तो पुरानी होती जाती है। नया मकान बनकर तैयार होता है तो दिल होती है अभी नये में जाकर बैठें। फिर पुराने से ममत्व टूट जावेगा। बाप मिसाल तो ठीक देते हैं। वह है हद की बात। यह है बेहद की बात। बाप कहते हैं मैं तुम्हारे लिए तीरी पर बहिश्त लाया हूँ। मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। छी–2 तमोप्रधान आत्मा तो जा न सके। सन्यासी लोग कहते हैं आत्मा तो निर्लेप है। बाकी शरीर छी–2 बनता है; इसलिए शरीर को स्नान कराने जाते हैं। बाकी आत्मा कहां जाये? आत्मा में ही तो खाद पड़ती है ना। सोने में ख(ा)द पड़ती है तो ज़ेवर भी ऐसे ही बनते हैं। आग में चीज़ पवित्र होती है। अभी तो बहुत बड़ी आग लगेगी। शरीर सभी जब जल जावेंगे। आत्मा तो नहीं जलेगी। आत्मा है ही अमर। वह लोग समझते हैं आत्मा में परमात्मा लीन हो जाती है। वह सभी है भक्तिमार्ग की बातें। अभी बाप कहते हैं भक्तिमार्ग की बातें सुना(सुनना) नहीं। जो बाप सुनावे, समझावे वह बातें सुन(ो)। सबसे मीठी बात करो। कोई से कड़वी बात नहीं। किसको दुःख दिया तो गोया रावण की मत पर चले। बाप तो कब किसको दुःख नहीं देते। यह भी पुरुषार्थी है। बाप के संग में रहते–2 कोशिश यही करते हैं मेरे द्वारा (कि)सको दुःख न हो। गाया भी जाता है सत का संग तारे, कुसंग बोरे। रावण का संग बोरे। सत के संग से चढ़ती कला होती है। रावण के संग से उतरती कला। यह और कोई नहीं जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं ; इसलिए बाबा याद प्यार भी नम्बरवार देते हैं। राजाई बननी है। सभी तो राजा नहीं बनेंगे। हरेक की चलन से समझ सकते हैं। यह राजा बनना है या नहीं। सर्विसएबुल बहुत लवली चाहिए। बाबा नाम भी लेते हैं। ज्ञान की खुशबुएं फलाने से लो। बाबा नाम नहीं लेते हैं। नहीं तो सभी कहेंगे हमको अच्छे–2 फूल दो। हमको थर्ड ग्रेड, फोर्थ ग्रेड क्यों देते हो? महारथी, घोड़े(सवार) प्यादे तो हैं ना। ओमशान्ति अच्छा।